RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति के लोकगीत पर एक विमर्श

विजय कुमार यादव

पी.एच.डी. शोध छात्र, हिन्दी विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश (भारत)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 January 2019

Keywords
आदी जनजाति, लिपि, लोकगीत, सामाजिक – संरचना, संचालन, प्रयोजन, सेहरा, शगुन, लीपो, लोरी, मिरी, अनुष्ठान, उपासना, दोनी – पोलो।

***Corresponding Author**
Email: vijaykr341[at]gmail.com

ABSTRACT

इस शोध पत्र में अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति के लोकगीत के बारे में बताने का प्रयास किया गया है। अरुणाचल प्रदेश की एक प्रमुख जनजाति है यह - आदी जनजाति । किसी भी समाज में लोकगीतों एवं लोककथाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है। लोकगीत, लोकमानस की कण्ठ से उपजा लोक – मधुर अभिव्यक्ति है। लोकगीत का विस्तार अत्यन्त व्यापक होता है। साधारण जनता जिन शब्दों में गाती है, रोती है, खेलती है, हँसती है, खुशीयाँ मनाती है उन सभी को लोक साहित्य के अन्तर्गत माना जा सकता है।

भारत के पुर्वोत्तर सीमान्त पर अवस्थित एक अत्यन्त खूबसूरत राज्य है,अरुणाचल प्रदेश। यह एक पहाड़ी प्रदेश है जो प्रमुख रुप से हिमालय के गोद मे बसा हुआ है । नदियों,निर्झरों,वनस्पतियों तथा पर्वतमालाओं आदि के रम्य वैविध्य से सूसम्पन्न यह राज्य जितनी अपनीप्राकृतिक सुन्दरता के लिए मनोमुग्धकारी है , उतना ही अपने मानवीय सौन्दर्य के लिए भी है। यहाँ के निवासियों की शांत प्रकृति औरमन मेंउमड़ती देशानुराग की भावना इसके सुंदरता में स्वाभाविक चार- चादँ लगा देती है । अरुणाचल प्रदेश में कुल 26 प्रमुख जनजातियाँ रहती है जिनमें आदी, गालों, न्यीशी, तागीन, मोम्पा, आपातानी, मिश्मी, खामती, नोकते, तांगसा,वांगचू, शेरदुकपेन इत्यादि प्रमुख है। इन सभी जनजातियों की अपनी-अपनी उपजनजातियाँ भी है । अरुणाचल प्रदेश में 100 से भी अधिक उपजनजातियाँ रहती है।अरुणाचली बोलियों की अपनी कोई लिपि नहीं है। इनमें से मात्र दो जनजातियाँ ऐसी है जिनकी अपनी एक अधूरी सी लिपि है। खामती जनजाति की हीनयानी बौद्ध लिपि तथा मोम्पा की महायानी बौद्ध लिपि है ।

आदी जनजाति अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों मे से एक है । इसकी कुल आबादी लगभग तीन लाख के आस – पास है । आदी जनजाति की अधिकान्श आबादी ईस्ट सियांग, अपर सियांग, सियांग, वेस्ट सियांग, तथा लोवर दिबांग वैली जिले में बसी हुई हैं। आदी जनजाति की कई उपजनजातियाँ भी हैं जैसें पादाम, मिन्योंग, मिलांग, पासी, पांगी, कारको, सिमोंग, बोकार, पाइलिबों इत्यादि। आदी समाज एक जनजातीय समाज हैं। जनजातीय समाज में लोककथाओं, लोकगीतों एवं त्योहारों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आदी जनजाति के विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलाप किसी न किसी लोककथा से सम्बन्धित होता है तथा इस में निरन्तर आयोजित होने वाले सामाजिक त्योहारों के माध्यम से पल्लवित- पुष्पित होते रहते है। अन्य जनजातियों की भाँति आदी जनजाति के त्योहारों की भी एक लम्बी सूची है । इन उत्सवों एवं त्योहारों के माध्यम से आदी जनजाति की जीवन शैली अभिव्यक्त होती है । जनजातीय समाज के रोम- रोम में उत्सव एवं त्योहार दिखाई पड़ते हैं । इन उत्सवों एवं त्योहारों के आयोजन के पिछे भी अनेक कारण होते हैं । इन उत्सवों एवं त्योहारों को मनाने का मुख्य प्रयोजन है, अच्छी फसल के लिए, नव वर्ष के स्वागत के लिए, स्वस्थ शरीर एवं पशूओं के लिए ।

आदी समाज की सामाजिक संरचनाविस्तृत एवं व्यवस्थित है । आदी समाज हर प्रकार के जाति- धर्म, कुल- वंश, गोत्र, वर्ण आदि की सीमाओं से परे है । आदी समाज में आते ही ऊँच - नीच, जातिवाद, धर्म की सभी परिभाषाएँ दम तोड़ देती है । जनजातिय समाज में इस तरह की खुबसुरती को देखना अपने आप में बहुत बड़ी बात है । आदी समाज किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष जाति के माध्यम से संचालित नहीं होती हैं । इनकें संचालन में प्रत्येक इकाई का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है ।

हमारे लोक-जीवन की दैनिक अनुभूतियाँ, हमारे हास-विलास एवं सुख- दुख की भावमय अभिव्यक्ति जब संगीतात्मक परिवेश में लयात्मक शब्दावली के माध्यम से अभिव्यंजित होती है तो उसे लोक-गीत कहाँ जाता है। यह गीत एक धारा के समान है जो अपनी देशज बोलियों से लोक- वाणी को प्रवाहित करती है।लोक गीत में गायन का भाव सहज ही सामने आ जाते है।लोक गीतों में लोक- जीवन की झाँकिया होती हैं। लोक- गीत, लोक- कण्ठ से उपजा लोक- मानस की मधुर अभिव्यक्ति होती है।लोक-गीतों में सामान्य जन की अनुभूतियों, भावनाओं एवं विचारों की सहज अभिव्यक्ति देखने को मिलती है ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लोक-गीत को ग्राम्य- संस्कृति के जागरुक प्रहरी भी कह सकते है।लोक-गीतों का संसार सत्य पर आधारित होता है। लोक-गायक के अनेक भावों का वास्तविक चित्रण लोक-गीतों में रहता हैं । लोक-गायक के मन में उत्पन्न होने वाली अनेक राग-विराग के सीधे एवं सच्चे भावों को निश्छल प्रकट करना ही लोक-गीतों की सबसे बड़ी विशेषता होतीहै।लोक- गीतो में प्राय: कृत्रिम साज-सज्जा का अभाव रहता है।

डॉ. विद्याबिन्दु सिंह ने अवधी लोक- गीतों का सामान्य परिचय प्रस्तुत करते हुए लिखा है – " लोक- गीत हमारी भावनाओं के निसर्ग उच्छवास हैं । इनमें बनावत की कहीं गन्ध मात्र नहीं । एक सहज मिठास और आकर्षण इन लोक- गीतों की प्रमुख विशेषता है । ह्दय के मार्मिक उद्गार अत्यन्त स्वाभाविक रुप से लोक- गीतों में स्फुरित हुए हैं । स्थानीयता का फुट भी इनमें सर्वत्र उपलब्ध होता है ।"

हमारे जनजीवन में लोकगीत के चलन की प्रचुरता एवं व्यापकता के कारण इनकी प्रधानता स्वाभाविक है । लोकगीत हमारे लोकजीवन की वास्तविक भावनाओं को प्रस्तुत करने में सफल होते है । इनमें मानव जीवन की पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की भावनात्मक चित्रण मिलता है । इनमें हमारे जीवन के हर एक पहलुओं का विभिन्न परिस्थितियों में मानसिक तथा शारीरिक कार्यों का यथार्थ चित्रण रहता है । लोकगीत से मानवजीवन का कोई भी पहलु अछूता नहीं रहता है । लोकगीत हमारे जनजीवन के हर एक पहलुओं का दर्पण होता है । लोकगीत के अनेक प्रयोजन हो सकते हैं, जैसे काम के बोझ को हल्का करना या फिर जनजीवन में समाज का मनोरंजन करना इत्यादि । डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक- गीतों को निम्नलिखित छह वर्गों में विभाजित किया है - (1) संस्कार सम्बन्धी गीत (2) व्रत- सम्बन्धी गीत (3)श्रम- सम्बन्धी गीत (4) ऋतु सम्बन्धी गीत (5) जाति सम्बन्धी गीत (6) देवता सम्बन्धी गीत|

विवाह मानव- जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कारों में से एक है । संसार के सभ्य एवं असभ्य सभी जातियों में यह संस्कार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है । मनुष्य जीवन में विवाह का जितना महत्व है उतना अन्य किसी भी संस्कार का नहीं है । आदी जनजाति के गीतों में शादी के समय इतने नेगाचार – लोकाचार प्रचलित नहीं है ।कन्या को अपने लिए वर चुनने की स्वतंत्रता होती है । माता- पिता भी अपनी बेटी के लिए वर की तलाश करते हैं परन्तु ऐसा करते समय कन्या की सहमति पर भी ध्यान दिया जाता है । पहले अपहरण द्वारा भी विवाह की प्रथा प्रचलित थी परन्तु अब यह प्राय: समाप्त हो गया है । आदी जनजाति में प्रमुख रुप से प्रेम विवाह पाया जाता हैं । आदी जनजाति के विवाह में उबतन, हल्दी, मांडव, तिलक, सेहरा,सिंदुर दान आदि रिवाज नहीं होता । लेकिन अपनी रीति- रिवाज के अनुसार लड़कीवाले को दी हुई वस्तुओं पर पोनुंग लोकगीत गाते हैं । इतना ही नहीं, लड़की को मामा की ओर से धान, मकई, बाजरा, मड़वा आदि अनाजों का बीज दिया जाता है । ताकि बेटी अपने नए घर में जाकर खेतों में उसे उगा सके । विवाह से पहले शगुन के तौर पर लीपो, चावल, पेय अदरक (पिसा हुआ अदरक में अंडा या मांस मिश्रण करके) आदि वस्तुओं को लेकर लड़की के घर में लड़के वाले जाते हैं । उन्हीं वस्तुओं के महत्व पर आधारित यह गीत इस प्रकार से है –

" केयुम मिती मोने के
ओमुम पीसाए दूदाक देलो
मिती लालूए रीबोक कूने
मिती नामीए बोबी नो
आदेंग मुकसूंग ए गयादुने ----- ।"

अन्य क्षेत्रों के लोकगीतो के समान आदी जनजाति के यहाँ भी मनोरंजन के लिए गीत गाये जाते है । जब आदी समाज के लोग परिश्रम का काम करते – करते ठक जाते है तो अपने ठकावत को दूर करने के लिए मनोरंजन के गीत गाते है । इसका एक उदाहरण इस प्रकार से है–

" मेमूना योयेंग
लेरो मोमान लाजू
आंगोगे लेरो मोमान लाजू
मेमूना योयेंग
मेमूना यो आयेंग
लेरो मोमान लिमांग
आंगोगे लेरो मोमान लिमांग
मेमूना यो आयेंग ---------- ।"

जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों के लोकगीतों में रोते हुए बच्चे को चुप कराने के लिए माताएँ तरह- तरह के गीत गाते है जिसे लोरी गीत कहते है उसी प्रकार आदी जनजाति के यहाँ भी बच्चे को नहीं रोने के लिए, उसे मनाने के लिए लोरी गीत गाते है । आदी जनजाति के लोग लोरी गीत को ' योयो गागा' कहते है । इसी प्रकार प्रस्तुत लोकगीत में छोटा भाई रो रहा है और उसे मनाने एवं चुप कराने के लिए उसकी बड़ी बहन लोरी गीत अर्थात ' योयो गागा' गीत गा रही है –

" ओ योयो लो ओ पेयो लो ओइ
ओ योयो गागे ओ पेयो गागे ओइ
ओ गंकके सी ओ आनी सी ओ तोनी सी ओइ
ओ इगंको कोई ओ अपूक मूजीरे
ओ गेयीर दूने ओइ
ओ गंकके सो ओ मिमी ओ लामकू सो
ओ केलू सो ओ आसोपे ओ दाकलांगका ओइ

ओ गंकके सीम ओ आनी सीम ओ तोनी सीम ---------- ।"

अन्य क्षेत्रों के तुलना में आदी जनजाति के यहां तुलसी, टेसू , सांझी के रुप में अनुष्ठानिक गीत नहीं है । आदी समाज में तीज का पर्व मनाने की प्रथा भी नहीं है । आदी समाज के लोग पुजारी को ' मिरी' कहते है । आदी समाज में उनका एक विशेष स्थान होता है । दुर – दुर के गाँवों से भी उन्हे अलग – अलग अनुष्ठान के लिए लोग बुलाते है । मिरी को आदी समाज में विशेष सम्मान दिया जाता है । मिरी गाँव में महामारी फैलने या फिर खेतों में अच्छे फसलों के लिए भी तरह – तरह के अनुष्ठान करते है । कहां जाता है कि एक बार लम्बे समय तक सूर्य छिप गया था और उसे वापस बुलाने के लिए मिरी द्वारा अनुष्ठानिक तंत्र – मंत्र किया गया था –

" बोमोंग ए नाने काजू काजू
बोमोंग ए लेनलांग कूका
कोमोंगए बोयेकू सोबू एम बोयेकू
बोमींग आपुंग पेरे को पेरे
बोमोंग आओ ए काजू काजू ---------- ।"

लोक- जीवन में पूजा – उपासना का विशिष्ट महत्व होता है । मानव परिस्थितियों की क्रूरता से इतना अधिक आक्रान्त हो जाता है कि वह अपनी सामर्थ्य पर विश्वास ही नहीं कर पाता है । ऐसी अवस्था में वह ऐसी अलौकिक एवं अमानवीय शक्तियों की ओर भागता है जिसका सम्बन्ध देवी – देवता से होता है । इन देवी – देवता की स्तुति करने पर हमारी जो दुर्बल मानसिकता होती है उसे पुष्ट बनाने में सहायक होती है । आदी जनजाति के लोग दोनी- पोलो अर्थात सूर्य – चन्द्रमा की स्तुति करते है । वे दोनी – पोलो को ही अपना ईश्वर मानते है । आदी समाज के लोग दोनी- पोलो पर अटूट आस्था रखते है । दोनी- पोलो की स्तुति से सम्बन्धित एक लोकगीत इस प्रकार से है –

" दोनी में कुमसी लाई --------
पोलो में कुमसी लाई ----------
तानी आमो सो दुना ताकाम ऐ ----------
आयांग एम पादू गंल ----------
आऊन लोक पादू गंल ----------
इगांग लोक पादू गंल ----------
ताकाम एम पादू गंल ----------
बीकके आयांग किसा ना ----------
पामाये कोलो ते ---------- ।"

अंत में निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि आदी जनजाति के लोकगीतों में अधिकतर गीत अति प्राचीन काल से ही मौखिक परम्परा के रुप में चले आते है । लिखित रुप का प्राय: अभाव होने के कारण आदी लोकगीतों के प्राचीन रुप उपलब्ध नहीं होते है । इसी लिए इन लोकगीतों में समय के साथ परिवर्तन आना भी स्वाभाविक है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

(1) मनोरम भूमि अरुणाचल, माता प्रसाद, प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाजार दिल्ली- 6, संस्करण- 1995
(2) हिस्टरी आँफ दि आदी आँफ अरुणचल प्रदेश, डॉ.एन लेगो, हिमालय पब्लिसर,नई दिल्ली
(3) दा केबांग, ए यूनीक इंडिजिनियस पोलिटिकल इंस्टितियुसन आँफ दा आदीस, बानी दांगेन, हिमालय पब्लिसर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2003
(4) सत्या गुप्ता, खड़ी बोली का लोक साहित्य, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1964,
(5) पूर्णिमा श्रीवास्तव, लोकगीतों में समाज, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1991,
(6) कृष्णदेव उपध्याय, हिंदी प्रदेश के लोकगीत, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद- 1990
(7) परवीन निजाम अंसारी, लोक साहित्य के विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2016

RRIJM 2015, All Rights Reserved